Pawan Kumar Sharma (IAS)

Divisional Commissioner, Bhopal &
Narmadapuram Divisions,
Bhopal, Madhya Pradesh.

MESSAGE

It is a matter of great pride for me that the 'Birthday Celebrations' of Maharaja Jagdev Panwar, are being organized in my native village Shahpur Jat and Ber-Sarai (in Delhi). It gives me personal satisfaction to know that a book titled 'Maharaja Jagdev Panwar- Ek Parichay', is also being published.

The Panwars and Brahmins in Shahpur Jat have a special relation with Indore, Dhar and Malwa region, the 'Karam-Bhumi' of Maharaja Bhoj and Maharaja Jagdev Panwar. While Panwars have their origin from 'Dhara Nagri (presently named as Dhar)', Brahmins have their roots in Malwa. The two separate family-trees of Brahmins living in Shahpur Jat village have their 'Shashan (origin)' as Indoria (from Indore) and Devasia (from Devas).

I feel privileged that I got an opportunity to work in Dhar and Indore, the birth place of our ancestors during my posting as Divisional Commissioner, Indore. Even in my present posting, I am fortunate to be working in Bhopal (earlier Bhojpal), the city named after Maharaja Bhoj.

It is most important for a nation that its people, particularly youngsters feel pride in their cultural and historical intellect. For that, it's necessarily required that authentic historical and cultural material is collected, researched and made available. I believe that the cultural celebrations and the book will enlighten the generations about the sacrifice and valor of Maharaja Jagdev Panwar; and about our rich cultural heritage.

With best wishes,

(Pawan Kumar Sharma)

Prashant Panwar, IAS
Collector & District Magistrate, Kaithal
Government of Haryana

Message

It is appreciation worthy that, residents of my native village, *Shahpur Jat*, along with Ber Sarai village are celebrating birth anniversary of "*Maharaja Jagdev Panwar*" on 14th February 2024 (*Basant Panchmi*). The life lessons of Maharaja Jagdev Panwar serve as a guiding light for young individuals navigating the complexities of life. I congratulate them for their endeavor and wish them all the best.

With Regards,

(Prashant Panwar)
7.2.2024

Charu Kain, JUDGE
Judicial Magistrate/Civil Judge
UP Judicial Service

Message

I'am extremely delighted to hear that residents of my native village, Shahpur Jat, along with Ber Sarai village are celebrating birth anniversary of "Maharaja Jagdev Panwar" on 14thFebruary 2024 (Basant Panchami), such sincere efforts are appreciation worthy. The life journey of Maharaja Jagdev Panwar would serve as an inspiration and guiding light for the young generation, his life lessons would surely motivate the youth to deal with the intricacies of life. Lastly, I would like to congratulate the residents of my native village and wish them all the best for their endeavour.The power of knowledge is in all of us.May Goddess Saraswati illuminate the glow and strive for more knowledge in us forever.

With Regards,

09/02/24

(CHARU KAIN)

Subey Singh Panwar

R/o H.No. 5, Dada Jungi House
Village : Shahpur Jat, New Delhi-110049
Chamber No. 348, Block -I, Delhi High Court
Shershah Road, New Delhi- 110003

On this auspicious occasion of celebrating and remembering the Hounble Shri Raja Jagdev Panwar's birthday and his contributions and achievements, it is with profound gratitude and great heartfelt moments to remember Shri Raja Jagdev Panwar's remarkable brave journey serves as a beacon of inspiration not only for the Jat community but for our nation as a whole. His unwavering dedication, tireless efforts, and visionary leadership have not only uplifted our community but have also contributed to the progress and prosperity of our nation. As we Celebrate Shri Raja Jagdev Panwar's accomplishments, let us also take a moment to reflect on the rich history, heritage and valueable achievements of the Jat community. From their valor and bravery on the battlefield and other forefronts to their significant and valuable contributions in various fields such as agriculture, cultural righteous, moral values, sports, and politics etc., the Jat community has played an integral & significant roles in shaping the cultural and social fabric of our nation. As in honour and glamour of our guiding souls like Raja Jagdev Ji, let us also take oath and reaffirm our commitment to serve our nation with integrity, honesty, diligence, and dedication with our best endeavours; let us also strive not only to emulate the exemplary righteousness, patriotism, unity, divine vision and leadership of Shri Raja Jagdev Panwar Ji and work together towards the common goal of building a stronger, more inclusive society and but also try to redefine the values, virtues of, patriotism, unity, sacrifice, far-reaching vision and society to transform into a better than best and mor than the most significant society ever. It is also incumbent upon us, as members of the Jat community and as faithful and loyal citizens of this great nation to harness our collective strengths, wisdoms and talents for the greater and better human life and virtues.So, let us continue to work together towards bridging divides, differences fostering harmony, and promoting the values of unity, diversity, and progress.Therefore, I would like to express my deepest gratitude to Shri Raja Jagdev Panwar Ji for his highness's invaluable and remarkable contributions to the service of Almighty and his creations. Let us continue to strive for excellence and to make meaningful contributions towards community, humanity and humility for the advancement of our community, nation and society as a whole, God bless his Creations.Thank you with sincere regards to all.

S S PANWAR, Advocate

हरि ओम तत् सत्

(प्रस्तावना)

संसार के सारे दीप बुझ सकते हैं परंतु साहस वह दृढ़ निश्चय के साथ इतिहास के भाल पर लिखी गई लिपि की ज्योति कभी बुझती नहीं है इस वक्तव्य को सार्थक करते हुए महाराजा जगदेव पंवार ने मानव जाति के लिए एक मिसाल स्थापित की। महाराजा जगदेव पंवार न केवल एक महान व्यक्तित्व के धनी थे बल्कि एक प्रतिभाशाली, कुशल, निडर, परमत्यागी, दूरदर्शी, महान योद्धा, कूटनीतिज्ञ, पारदर्शी, धर्म-परायण, धर्मनिरपेक्ष और अपने सिद्धांतों के धनी व्यक्ति थे। अत: इस मानव के व्यक्तित्व, साहस और कर्तव्य का सही आंकलन करना पंवार बन्धुओं का ही नहीं अपितु समस्त मानव जाति का परम धर्म और कर्तव्य है।

अब मैं आप सभी बंधुओ को शाहपुर जाट व बेर सराय गाँवो के स्वर्णिम इतिहास के बारे में संक्षेप में अवगत कराता हूं। शाहपुर जाट व बेर सराय गाँवो में पंवार वंश का आगमन कैसे कब और किन परिस्थितियों में हुआ तथा हमारे वंशज सबसे पहले कौन आए थे। पंवार वंश का आगमन गागौरगढ़ से बागौरगढ़ से उज्जैन (धारा नगरी) से अमन नगरी, से कोटा बूंदी, से फिर इंडरी बागौरगढ़ से उज्जैन (सोहना- हरियाणा) और इंडरी से सन 1388 ई० में शाहपुर जाट गांव में पहुंचे! जैसा की जानकार बताते हैं और भाट राजेंद्र राय की पोथी जो कि उस समय सरकारी मान्यता प्राप्त होती थी, उसके अनुसार सन् 1388 ई० में पंवारो का आगमन शाहपुर जाट गांव में हुआ।

उस समय दिल्ली में फिरोजशाह तुगलक की सल्तनत थी। उससे पहले दिल्ली में अलाउद्दीन खिलजी वंश का साम्राज्य लगभग 30 वर्षों (1290- से 1320) तक था जिसके खण्ड हर गांव में चारों तरफ खड़े है या पड़े है उसी काल खण्ड के है।

कैसे आये?

जानकारी तथा पोथी के रिकॉर्ड के अनुसार शाहपुर जाट गांव डागर गोत का खेड़ा कहलाता है। मुस्लिम शासको के आगमन से पूर्व हमारे गांव का

नाम रामपुर था, मुस्लिम शासको के आगमन व आक्रमण के पश्चात हमारे गांव का नाम रामपुर से बदलकर शाहपुर कर दिया, तब से आज तक हमारे गांव का यही नाम चला आ रहा है!

जैसा कि इतिहासकार बताते है उस समय मुस्लिम शासको द्वारा हिंदुओं पर बहुत अत्याचार होता रहता था!

उस समय जो डागर बन्धु शाहपुर जाट गांव में बसे हुए थे वो भी मुस्लिम शासको के जुल्म और अत्याचारों से अछूते नहीं थे! तब उन्होंने अपनी यह परेशानी कुछ अपनों से साझा की! तब उन भाइयों ने डागर बंधुओ को समझाया और सुझाया कि आप लोगों की आबादी कम है, इसलिए प्रयास करके यहां कुछ अपने अन्य जाट परिवारों को रहने के लिए बुलाओ इस सुझाव पर गंभीरता से अमल करते हुए डागर बंधुओं ने गांव इंडरी (सोहना-हरियाणा) में अपने कोई संबंध निकाले और उन अपने जानकार बन्धुओं से मुस्लिम शासको द्वारा उन पर किए जा रहे जुल्म और अत्याचारों से अवगत कराया! अत: डागर बंधुओ की हृदय विदारक परेशानी व परिस्थिति को जानकार व समझकर इंडरी (सोहना हरियाणा) से श्री मोतीराम पंवार जी के तीन सुपुत्र शाहपुर जाट में आकर बसने के लिए तैयार हुए! जिनमें बड़े भाई बाबा नरपाल पंवार, मंझले भाई बाबा हरपाल पंवार तथा छोटे भाई बाबा जसपाल पंवार पूरे परिवार के साथ शाहपुर जाट गांव में सपरिवार पधारे। बड़े बाबा नरपाल जी अपने दोनों छोटे भाइयों के परिवार व अपनी धर्म पत्नी दादी धनकौर के साथ शाहपुर जाट गांव में आए! जैसाकि हमारे बुजुर्गो ने बताया है कि दादी धनकौर गांव बिरधाना से दहिया गोत की थी!

किस दिन शाहपुर जाट गांव में आए?

बाबा नरपाल अपने परिवार के साथ शाहपुर जाट गाँव में सन् 1388 विक्रमी संवत् 1445 ई. वार ईतवार महीना आषाढ़, अष्टमी बदी को यहाँ शाहपुर जाट गांव मे पधारे थे, यानि कि आज से लगभग 636 वर्ष पूर्व!

डागर बंधुओं ने स्वागत में क्या दिया ?

जैसा कि हमारे बुजुर्गो ने बताया डागर बंधुओं ने बाबा नरपाल के परिजनों को खेती के लिए 700 बीघे पक्की धरती दी, इसके साथ-साथ रहने के लिए करीब पचास बीघे पक्की धरतीं दी, साथ दस मण अनाज दिया और एक भेली गुड़ की दी, बड़ी दादी के लिए एक जोड़ी कडुले दिये, बाबा नरपाल को चाँदी के मूठ वाली एक तलवार के साथ में एक घोड़ा भी दिया! इस प्रकार से डागर बंधुओं ने बाबा नरपाल व उनके भाईयो व परिजनों का आदर-सत्कार किया!

इसके बाद क्या हुआ ?

कुछ समय मे बाबा नरपाल व उनके परिवारजन शाहपुर जाट गांव मे सही से रहने लगे और खेती करने लगे! लेकिन कुछ समय बाद दोनों छोटे भाई हरपाल पंवार व जसपाल पंवार के परिवार शाहपुर जाट से सुनहेडा-बसी गांव (उत्तर प्रदेश) में जाकर बस गये!

इस दौरान बाबा नरपाल व बड़ी दादी के तीन बेटे सैमीर लाल, अभयलाल, खुशीलाल पैदा हुए!

इसके पश्चात् दादा नरपाल के बड़े सुपुत्र श्री अभयलाल जी के तीन बेटे श्री लछमीराम, श्री मुलफा, श्री पाचियान पैदा हुए! इस प्रकार से परिवार बढ़ने लगा। ऐसे होते-होते... अगर आज के सन्दर्भ मे बात करें तो अपने गाँव शाहपुर जाट में करीब तीस वर्ष पूर्व तक दादा नरपाल जी के वंशजो की अलग-अलग थोक इस प्रकार से थी।

1. भाऊँ थोक 110, 2. तिहाई थोक 110, 3. काणे थोक 75, 4. अंधे-गंजे थोक 115, 5. काबे थोक 35

इस तरह से शाहपुर जाट गांव मे करीब 445 घर (धेली) हो चुकी थी।

गांव बेर सराय कब और कैसे बसा, किसने बसाया ?

इस तरह से बाबा नरपाल की पुण्याई (वंशज) यहाँ तक पहुँची कि करीब पौने तीन सौ साल बाद तत्कालिक वंशजों में से एक बाबा श्री नैनसुख पंवार जी ने एक मील की दूरी पर दूसरा गाँव जोकि बेर सराय के नाम से जाना

जाता है सन् 1660 ई० विक्रमी संवत् 1715, शुदि दोज वार सोमवार को गाँव आबाद किया! वहाँ पर उन्होंने 1600 बीघे हल चलती धरती का कुर्सीनामा अपने नाम कराया। यह संक्षिप्त इतिहास शाहपुर जाट व बेर सराय गांवो का आपकी जानकारी के लिए साझा किया है।

इसी प्रकार हमारे कुछ सामाजिक, प्रतिष्ठावान, जागरूक, जिम्मेवार, जवाबदेह, सिद्धांतवादी बन्धुओं ने अपने पंवार वंश के इतिहास की प्रज्वलित ज्योति को प्रकाशवान बनाये रखने व अपनी आने वाली पीढ़ियो को अपने स्वर्णिम इतिहास से अवगत कराने के उद्देश्य से व अपने एक वैभवशाली, महापराक्रमी, सिद्धांतवादी, मानवतावादी व पुरुषार्थ के धनि पूर्वज महाराजा जगदेव पंवार जी के जन्म महोत्सव को प्रतिवर्ष किसी न किसी गांव में मनाने का सुखद निर्णय **ककड़ीपुर गांव** की एक सभा में लिया गया! अत: इस सन्दर्भ मे प्रथम महाराजा जगदेव पंवार जन्मोत्सव समारोह **15 फरवरी, 2013 (बसंत पंचमी)** को माननीय भूतपूर्व सांसद श्री हरपाल पंवार के नेतृत्व में **नाला गांव** में मनाया गया था! जिसकी अध्यक्षता चौधरी धर्मवीर सिंह जी ने की ओर संचालन माननीय श्री रण सिंह पंवार मास्टर जी ने की थी! इसके पश्चात दूसरा समारोह ककड़ीपुर गांव में आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रधानाचार्य श्री जगपाल पिन्ना जी ने की थी और उस समारोह का नेतृत्व श्री मनोज चौधरी द्वारा किया था तथा उस समारोह का पूर्ण संचालन श्री रण सिंह पंवार द्वारा किया गया था! तत्पश्चात पंवार बन्धुओं के आपसी समन्वय, सहयोग तथा प्रेरणा से वर्ष 2016 का राजा जगदेव पंवार जी का जन्मोत्सव गांधी स्मारक इंटर कॉलेज **गांव दौघट** (बागपत जिले) में मनाया गया! जिसका आयोजन दोघट गांव रहा एवं मंच संचालक मास्टर रणदेव सिंह पंवार जी ने किया।

इस वर्ष 2024 का राजा जगदेव पंवार जन्मोत्सव सकल पंचायत गांव शाहपुर जाट एवं बेर सराय दिल्ली के द्वारा संयुक्त रूप से झंकार सभा स्थल-शाहपुर जाट गांव मे मनाया जा रहा है! इस समारोह को भव्य, आकर्षक तथा यादगार बनाने के लिए शाहपुर जाट एवं बेर सराय गांव की संयुक्त

कार्यकारणी के सदस्यों व निमंत्रण कमिटी के सदस्य श्री भरत पंवार, श्री जय भगवान पंवार, श्री राजेंद्र पंवार, श्री सुरेंद्र शाहपुरिया पंवार, श्री पदम पंवार, श्री हरीकिशन शर्मा, श्री देवीलाल पंवार तथा दोनों गांव के समस्त पंवार व सभी बन्धुओं के पूर्ण सहयोग व समन्वय के लिए सभी भाई और नौजवान साथी बधाई व धन्यवाद के पात्र हैं। समारोह से पूर्व दोनो गाँवो के वरिष्ठ, नौजवान व अन्य बन्धुओं ने कई संयुक्त सभाओं का आयोजन किया ताकि पूरे समारोह को व्यवस्थित व सफलतापूर्वक आयोजन किया जा सके। यह दोनों गाँवो के सभी बन्धुओं के बीच आपसी सहयोग, समन्वय, भाईचारे, प्रतिबद्धता तथा उनके कर्तव्यनिष्ठा का प्रतीक है। इसके साथ-साथ मैं अपने गांव शाहपुर जाट एवं बेर सराय गांव के बन्धुओं के साथ उन सभी पंवार बन्धुओं को विशेष रूप से बधाई व धन्यवाद का पात्र मानता हूँ जिन्होंने अपने कठोर परिश्रम, दृढ़संकल्प व प्रयासो से ना केवल अपना, अपने परिवार, गांव व पंवार वंश का गौरव शिक्षा, सामाजिक सेवा, कानून, न्यायिक, आर्थिक, शासकीय, चिकित्सा क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र, जन-कल्याण व अन्य क्षेत्रों मे मानव कल्याण, सभ्य समाज व राष्ट्र निर्माण में अपना विशेष योगदान दिया है और जो अभी भी अपनी सेवाएं इन क्षेत्रों में दे रहे हैं तथा एक मिसाल कायम कर रहे है। हमें सभी पंवार बन्धुओं को उनके इन कार्यों व प्रयासों के लिए गर्वित महसूस होना चाहिए! उनमें से मैं कुछ पंवार बन्धुओ व बान्धवीयो का उल्लेख जरूर करना चाहूंगा! जिनमे हमारे उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश महावीर सिंह पंवार, लंबरदार भीम सिंह पंवार (समाज सेवी), चौधरी दिलीप सिंह पंवार (पूर्व सांसद व दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष), प्रोफेसर डॉ राजेंद्र देव पंवार (पूर्व प्रधानाचार्य-दिल्ली विश्वविद्यालय व दिल्ली विश्वविद्यालय की अकैडमिक काउंसिल के सदस्य), श्रीमती जय श्री पंवार (पूर्व महापौर दिल्ली), डॉक्टर यशपाल (पूर्व जिलाधीश), श्री विनोद पंवार (आईएएस-जिलाधीश),श्री हरपाल पंवार (पूर्व सांसद), श्री मनोज चौधरी (राजनितिज्ञ), श्री रतनलाल पंवार (पूर्व विधायक), श्री पवन शर्मा (आईएएस वर्तमान मे क्षेत्रीय आयुक्त भोपाल-मध्यप्रदेश), श्री प्रशांत पंवार

(वर्तमान आईएएस जिलाधीश-हरियाणा), प्रोफेसर डॉ सुरेंद्र पंवार (वर्तमान मे दिल्ली विश्वविद्यालय व अकैडमिक काउंसिल के सदस्य), कुमारी प्रियंका पंवार (एशियाई खेलों में पदक विजेता), अनुज चौधरी (अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित), प्रोफेसर डॉ. पूरवी पंवार (दिल्ली विश्वविद्यालय, समाचार पत्र लेखिका व वर्तमान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सदस्या), पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विख्यात शल्य-चिकित्सक डॉ अनिल पंवार, डॉ. भूपेश पंवार (यू.एस.ए. व हमारे देश में हाल ही में बहू राष्ट्रीय कंपनी के संस्थापक), कर्नल विकास पंवार (वर्तमान में सेना भवन में कार्यरत), श्री नरेंद्र पाल पंवार (पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रख्यात अधिवक्ता), श्री राजीव पंवार (वरिष्ठ पीसीएस आदमपुर), श्री सुखबीर पंवार (उपाध्यक्ष दिल्ली कोऑपरेटिव बैंक), श्री सार्थक पंवार (वर्तमान में सिविल जज-दिल्ली), श्रीमती चारु केन (सिविल जज/नगरीय दण्डाधिकारी-उत्तर प्रदेश), श्री राम किशन पंवार (व्यवसायी व समाज सेवी), श्री हुकम सिंह पंवार (पूर्व डी.आई.जी- सी.आई.एस.एफ.), श्री शेर सिंह डागर (राजनेता व सामाज सेवी), श्री कृष्ण पंवार (हमारे वरिष्ठ बुजुर्ग व मार्ग दर्शक), श्री भीम सिंह पंवार (हमारे वरिष्ठ बुजुर्ग व मार्ग दर्शक) श्री सत्यपाल पंवार (पूर्व प्रधानाचार्य), श्री प्रेम सिंह पंवार /बाबा (समाज सेवी), श्री धर्म सिंह पंवार (समाज सेवी), श्री राजेन्द्र सिंह पंवार (पूर्व अपर निर्देशक- लोकसभा सचिवालय) लेखक : पंवार वंश का इतिहास पुस्तिका, श्रीमती सरोज पंवार (पूर्व प्रधानाचार्य), कुमारी श्वेता शर्मा (वर्तमान सह-प्राध्यापिका- करोडीमल महाविद्यालय- दिल्ली विश्वविद्यालय), श्रीमती मीनू पंवार (पूर्व पार्षद), श्रीमती सुमन मंजरी पंवार (पूर्व इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस- हरियाणा पुलिस) श्री हरिकिशन शर्मा (आयकर अधिकारी व सामाज सेवी), श्री रविन्द्र पंवार (मास्टर जी व सामाज सेवी) श्री हरजीत सिंह पंवार (शिक्षा अधिकारी- दिल्ली सरकार), श्री सुनील पंवार (वर्तमान डिप्टी कमांडेंट- सी.आर.पी.एफ), श्री कुलदीप पंवार (सह-प्राध्यापक आई.पी. विश्वविद्यालय दिल्ली व व्यवसायी), श्री सुखबीर पंवार (राजनेता व सामाज

सेवी) श्री बिजेंद्र पंवार (राजनेता व वर्तमान मे राष्ट्रीय लोकदल कोषाध्यक्ष), श्री राघवेंद्र सिंह (अधिवक्ता व मुख्य-प्रबंधक बहुराष्ट्रीय कंपनी), श्री नवनीत पंवार (अधिवक्ता दिल्ली उच्च न्यायालय) श्री अमन पंवार (राजनेता व उच्चतम न्यायालय मे कर्नाटक सरकार के अतिरिक्त महा-अधिवक्ता), श्री अशोक पंवार (राष्ट्रीय बॉक्सिंग कोच व राष्ट्रीय पदक विजेता) मनोज पंवार (बाक्सिंग कोच व एशियाई खेलो में कास्य पदक विजेता), श्री भरत पंवार (उद्यमी व सामाज सेवी), श्री जितेन्द्र पंवार @जीया (समाज सेवी), अमरजीत पंवार भाई (व्यवसायी व समाज सेवी) और अनेकों ऐसे बंधुओ से प्रेरित समाज की नौजवान पीढ़ी, बच्चों को एक कर्मठ जीवन, सभ्य समाज के साथ-साथ एक मजबूत राष्ट्र निर्माण में अपना सकारात्मक योगदान देना चाहिए। अपनी इसी सकारात्मक सोच, योगदान व ईमानदार प्रयासों से हम सभी मिलकर एक समद्ध राष्ट्र का निर्माण कर सकेगें तथा अपने नौजवान साथियों को समाज के प्रति जागरूक बनाना व उन में एक दृढ़ राष्ट्रवाद की भावना की ज्योति को प्रज्वल्लित रखना हमारा एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

प्रिय बन्धुओं

पंवार चाहे राजपूत हो, गुर्जर हो, यादव हो, जाट हो, राव हो, मुसलमान जाट हो, सिख जाट हो सभी राजा जगदेव पंवार के वंशज हैं सभी उन्हें अपना आदर्श व प्रेरणा का स्रोत मानते हैं! उनका जीवन हमारे लिए आदर्श और प्रेरणा का स्रोत है राजा जगदेव पंवार का जन्मदिवस समारोह इस बार हम भी शाहपुर जाट एवं बेर सराय दिल्ली के सभी भाई सयुंक्त रुप से मनाने के लिए सकल पंचायत गांव में समारोह का आयोजन झंकार सभा स्थल, शाहपुर जाट गांव मे कर रहे है। शाहपुर जाट व बेर सराय दोनो गाँवो के आपसी प्यार, भाई-चारा, मेलजोल, तालमेल व हमारे पूर्वजों और बड़ो द्वारा स्थापित सामाजिक व सांस्कृतिक रीति-रिवाज की धरोहर का सम्मान, आपसी आदान-प्रदान, एकता और शांतिप्रिय जीवन के लिए जाने जाते है। अंत में इसके साथ-साथ मैं अपने समारोह की कार्यकारणी है। व स्वागत परिषद के सदस्य श्री भरत

पंवार, श्री सुरेंद्र पंवार शाहपुरिया, श्री जय भगवान पंवार, श्री हरीकिशन शर्मा, श्री पदम पंवार, श्री राजेंद्र पंवार, श्री देवीलाल पंवार, सुभाष पंवार, ऋषि पंवार, डा. रूपाली सिंह (MBBS, MD (Ophthalmology), DNB, F.C.I.S. Eye Surgeon, हिमानी गिल (Judicial Magistrate First Calss & Civil Judge, (H.C.S.) Both D/o Sh. Mohan Singh, Vill. Ber Sarai, New Delhi-16, रवि पंवार सुपुत्र चौधरी छत्तरसिंह पंवार, बेर सराय, नई दिल्ली (Achievements, Asia Gold Medal, World Silver Medal, Sheru Classic 2nd and 3rd, Olympia 2nd and 3rd, Best Men's Physique award 2023, Delhi Pride Award 2019, Best Fitness Influencer Award 2019 और दोनों गाँवो के उन सभी महानुभावओ का हृदय से धन्यवाद देता हूं जिन्होंने अपने महान, महाप्रतापी, महात्यागी, कर्तव्य परायण, निष्ठावान, सिद्धान्तवादी, व परम योगी पूर्वज राजा जगदेव पंवार जी को याद करते हुए इस जन्मोत्सव समारोह को भव्य, सफल, यादगार व गौरवशाली आयोजन करने के तन, मन, धन, समय, सूझबूझ, आपसी सम्मान और समन्वय से ना केवल एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं बल्कि मेरे साथ-साथ हमारे सभी नौजवान भाईयो, बच्चों, माता-बहनों व सभी बंधुओं का मार्गदर्शन व उत्साहवर्धन करते रहते है!

हृदय से शुभकामनाओं के साथ

सूबे सिंह पंवार
(वरिष्ठ अधिवक्ता-सर्वोच्च न्यायालय- भारत)
गांव शाहपुर जाट, नई दिल्ली, मो० 9312234919

सम्पादकीय

समाज और राष्ट्र के प्रति

देश अथवा राष्ट्र, मात्रभूमि के टुकड़े के रुप में नहीं बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक रुप से भावनात्मक संगठन के रूप में मान्य होता है इसी भावना से ओत-प्रोत हमारे यहाँ राष्ट्र देव के रुप में पूजनीय एवं वन्दनीय रहा है । हिन्दू राजतन्त्र में राठ, द्विराठ, अराठ, सम्राट तथा इसी क्रम में चौधराठ भी राजतन्त्र विज्ञान का ही एक अंतिम अंग रहा है परन्तु विदेशी आक्रन्ताओं शासकों एवं उनके आश्रित इतिहासकारों ने हिन्दू गणराज्य की अवहेलना कर अपने इतिहास को इस प्रकार हम पर थोपा कि हम आज अपने अतीत की उन घटनाओं और तथ्यों को भी नकारते हैं जो सत्य की कसौटी पर प्रमाणों द्वारा प्रसिद्ध होने के बावजूद भी मान्यता के अभाव में इतिहास ग्रन्थों से ओझल हैं। राजाश्रित इतिहासकारों द्वारा लिखित इतिहास ही हमें पढ़ाया जाता रहा है, जिसमें लेखकों का ध्यान केवल मात्र अपने आश्रयदाताओं के मनोकूल घटनाओं का वर्णन उद्दत होता है जो कि वास्तविकता से नहीं अपितु आश्रयदाताओं की प्रेरणा के लिए लिखे गये हैं भले ही उनमें झूठ और अतिश्योक्ति क्यों न हो और वास्तविक घटना चक्र के सर्वथा प्रतिकूल ही होने के बावजूद अपने आकाओं की प्रशंसा करके उन्हें खुश करने के लिये लिखे गये हैं। इससे स्पष्ट होता है कि इस देश के वास्तविक इतिहास को सामने आने न देने का सफल प्रयास विदेशी शासकों द्वारा किया गया इसीलिए यहाँ की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन (सही तथ्य) स्कूलों व महाविद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले इतिहास ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं हैं जबकि राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना इस देश में सर्वोपरि रही है लेकिन विदेशी प्रभाव एवं मैकाले शिक्षानीति उद्धरत से प्रभावित हम उन्हीं बातों को इतिहास का सत्य मानने को विवश हैं जो हम पर थोपा गया है। हमारी और हमारे बुद्धिजीवियों की एक बड़ी कमजोरी रही है कि वे विदेशी लेखकों द्वारा तथ्यों को ही सर्वोपरि मानकर आँख मीचकर उसे आधार मानते आये हैं भले ही वह

सच्चाई से कोसों दूर हो तथा अपने यहाँ के लिखे गये प्राचीन लेखों को नकारते चले आ रहे हैं। जबकि हर खानदान एवं वंश के लेख या रिकार्ड को यहाँ प्राचीन काल से ही रखरखाव करने वाला एक वर्ग विशेष इसी कार्य को करता रहा है। उनके द्वारा लिखित घटना और वंशानुगत क्रम को नकारने की प्रवृत्ति हमारे यहाँ मैकाले शिक्षा नीति व्यवस्था की देन है। इसका मुख्य उद्देश्य यहाँ की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की श्रेष्ठता को नष्ट भ्रष्ट कर अपनी स्वार्थपूर्ण नीति की श्रेष्ठता को उजागर करना ही एक मात्र उद्देश्य रहा है।

एक राष्ट्र के लिए सर्वप्रथम आवश्यक है कि बौद्धिक प्रतिभा यह मान्यता हमारे पूर्वजों की रही है। जिस राष्ट्र में बौद्धिक प्रतिभाएँ होंगी वह विकास के पथ पर अवश्य ही आगे बढ़ेगा। बौद्धिक प्रतिभाओं की रक्षा के लिए शास्त्र साल्ये भी उतनी ही आवश्यक है। याज्ञवल्क्य लिखते हैं ''प्राणों में क्षत्रम्'' अर्थात क्षत्रिय ही राष्ट्र का प्राण हैं। प्राणहीन जीवन, जीवन ही नहीं उसी प्रकार सामरिक शक्ति से हीन राष्ट्र अपने अस्तित्त्व की रक्षा नहीं कर सकता, किसी समुन्नत राष्ट्र के लिए उसका आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होना भी अनिवार्य है। राष्ट्र का अर्थ तन्त्र व्यापारी वर्ग के अधीन होता है। शास्त्र का वचन है ''श्री वे राष्ट्रम्'' श्री वे राष्ट्रस्य भार: ।। राष्ट्राय मध्याये। अर्थात् राज्य लक्ष्मी ही इस राष्ट्र का स्वरुप है। वही राष्ट्र स्मरण करती है राजश्री ही राष्ट्र की रीड़ की हड्डी के समान होती है। किसी भी राष्ट्र (देश) के प्रतिभाशाली, बुद्धिजीवी ब्राह्मणों, वीर क्षत्रियों अथवा अरबपति व्यापारियों का नाम राष्ट्र नहीं होता। याज्ञवज्क्य के शब्दों में राष्ट्रवै मुष्टि (शतपत) अर्थात ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य, शुद्र, ब्रह्मचारी, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी आदि सभी वर्ग और आश्रमवासियों में संयुक्त रुप से राष्ट्रभक्ति होने पर जब सबकी एक भाषा, एक संस्कृति एवं राष्ट्रदेव एक राजा एक न्याय व्यवस्था एक संविधान होता है। तब वे राष्ट्र के नागरिक एक दूसरे के लिए शरीर के अंगवत सेवा कार्यों में संलग्न होते हैं तभी वह राष्ट्र कहलाता है। जब सब अपने अपने स्वार्थों में प्रवत्त हो न कोई राजनियम हो न धर्म न भाषा न न्याय वह राष्ट्र, राष्ट्र नहीं रह

जाता। राष्ट्र में समग्र उत्थान के लिए आवश्यक है कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक आस्तिक हो। आस्तिकता से अभिप्राय पाखण्ड नहीं। अज्ञानी आदमी पाखण्डी तो हो सकता है किन्तु आस्तिक नहीं हो सकता। सब सत्य विधा और पदार्थ विधा से जाने जाते हैं। उन सब का आदि मूल परमेश्वर है, इस सच्चाई को अज्ञानी नहीं समझ सकता।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने सृष्टि का निर्माण करके मानव को सत्य विधा का उपदेश भी दिया, वेद का ज्ञान, सृष्टि आदि में ही मानव को दे दिया था। वेद सब सत्य विधाओं की पुस्तक है। वेद पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना राष्ट्र में सभी नागरिकों का प्रथम कर्तव्य है। वैदिक संस्कृति से भटक कर ही पृथ्वी पर अनेकों मतमतान्तर पैदा हुए हैं उसी से ईश्वर के स्थान पर व्यक्ति पूजा, पाषाण पूजा आदि प्रारम्भ हुई वैद विद्या की वृद्धि और विद्या के स्थान पर अंग्रेजी, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं का प्रचार करने वाले वास्तव में राष्ट्रद्रोही हैं। राष्ट्र के हित का चिन्तन करने वाला दूरदर्शी शासक ऐसा कभी नहीं कर सकता। वेद और उसकी भाषा भारत राष्ट्र की अमूल्य धरोधर है उसकी रक्षा में ही मानव जीवन की उत्पत्ति और राष्ट्र का विकास सन्निहित है। वेद की शिक्षा के अनुसार विश्व बन्धुत्व का स्वप्न साकार हो सकता है। आज हम जिस कुल का वर्णन करने जा रहे हैं वे वैदिक सभ्यता संस्कृति के प्रति आस्थावान व प्रबल सर्मथक रहे हैं क्योंकि सब मनुष्यों को सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिए सदैव उद्धत रहने की प्रेरणा मिलती है तथा सब कार्य धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य पर विचार करके ही करने चाहिए। संसार का उपकार करना ही वैदिक विधा के प्रचार, प्रसार का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् प्रत्येक की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना, धर्म प्रेमी सभी लोगों को प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार आचरण करने की प्रेरणा मिलती है। राष्ट्र के विकास के लिए प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहे किन्तु समग्र समाज व राष्ट्र की उन्नति को ही अपनी उन्नति के रुप में उसके लिए सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक सर्व हितकारी नियम

में सब स्वतन्त्र रहें। ये ही किसी राष्ट्र को सुसंस्कृत और समुन्नत करने वाले स्वर्णिम सिद्धान्त हैं इनके बिना कोई राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। यह विचार आज हम भूला चुके है लेकिन जिनके पूर्वजों ने ये विचार कार्य रूप में परिणित किये उनमें राजा मुंज और भोज, उदादिव्य और जगदेव पंवार जैसे उद्भट वीर पुरुषों के वंशज आज आज्ञान्धकार में लिप्त अपने पूर्वजों को भुलाते जा रहे हैं। उनके पूर्व इतिहास की जानकारी देकर जाग्रत करने के लिए यह इतिहासवृत्त तैयार किया जा रहा है कि उनको अपने पूर्वजों के वे स्वर्णिम सिद्धान्तों को अपनायें जिनके बिना कोई उन्नति नहीं कर सकता। यदि आप अपने पुरखों द्वारा उद्घोषित देश और राष्ट्र के नागरिक अधिकारों, नियमों का पालन करने लगे तो यह देश भारत पुन: विश्व गुरु कहलाने लगे और अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर ले। ऐ पवांरो आप अभी अपने पुरखों के बताएं इसी रास्ते को अपना ले तो जीवित रहोगें और गर्व के साथ आपको भारतीय कहलाने का हक होगा। समाज को पाखण्डों में फसाने का मुख्य दोष यहाँ के पंडे पुजारियों का ही है। यदि ये नहीं होते तो भारत दुनिया में श्रेष्ठ एवं धनाड्य देश होता। आज हम जिस वंश का वर्णन कर रहे है उनसे ये आशा करते है कि वे अपने पुरखों के मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने इस देश अथवा राष्ट्र को पुन: वैभवशाली एवं शक्तिशाली बनाने में अपना योगदान ठीक उसी प्रकार देगें जैसा उनके पूर्वजों ने दिया है। व्यक्ति एक राष्ट्र के रुप में इस देश को संगठित करने का मार्ग दिखाता था। भारत देश एवं राष्ट्र को, राष्ट्र के रुप में संगठित करने का आवाहन् करते हुए पंवारो के आत्मविश्वास और आत्मगौरव की स्मृति को उजागर कर रहे है ताकि ये जागृत होकर संगठित होकर इस राष्ट्र को परम् वैभव की ओर ले जाने में अपना योगदान कर सकें। इसी आशा और विश्वास के साथ कि ये पवांर समाज के अन्य वर्गों को साथ लेकर आगे बढ़े और अन्यों का मार्ग दर्शन कर मार्गोन्मुखी विश्व के लिए आदर्श बनकर जीए इन्हीं शुभकामनाओं सहित सधन्यवाद

आपके सहयोग में

डा. महक सिंह देव

प्रधान (शामली)

जगदेव पंवार

एक महान योद्धा के रुप में

साम्प्रदायिक सौहार्द पारस्परिक सहयोग और राष्ट्रीयता की पावन त्रिवेणी में आव्हान करने वाले राजा जगदेव पंवार वंशजों का एक शानदार ऐतिहासिक परम्परा से युक्त पंवारों अपने पूर्व पुरखों की स्मृति को स्मरण कर भावी पीढ़ी के लिये विरासत में आत्माभिमान, नैतिक बल एवं उच्च मानवता का मार्ग प्रशस्त करने के प्रयास के लिये मैं आपको/पंवार बन्धुओं बधाई देता हूँ। किसी भी महान आत्मा परम पुरुष मानवता के प्रेरक ऐतिहासिक पुरुष का जन्मोत्सव या पुण्य तिथि मनाने की परम्परा को एक तरह से सांस्कृतिक पुर्नजागरण के रुप में देखा जाना चाहिये जिसका अर्थ अतीत की ओर लौटना नहीं, गढ़े मुर्दे उखाड़ना नहीं बल्कि उस सच को इस्तेमाल करना भी होता है जो समय की कसौटी पर खरा उतरा है। जिसकी हमें बहुत ही अत्याधुनिक न्यूनताओं से भी ज्यादा आवश्यकता है। हम मिलजुलकर अतीत पर विचार करते हुए इस पर भी ध्यान दें कि हमारे पुरखे क्या थे? हम क्या है? और हमारी भावी पीढ़ी कहा जा रही हैं। यदि इस पर ध्यान देगें तभी हमे अपने अतीत से प्रेरणा एंव ऊर्जा मिलेगी। हम वर्तमान को ध्यान में रखकर भविष्य की योजना बनाकर सफल हो सकते हैं यही ध्येय इतिहास का है जो हमेशा अपने आप को दोहराता है।

अब मैं आपके कुल पुरुष राजा जगदेव पंवार के सम्बंध में बताना चाहता हूँ कि वह मालवा की राजधानी धारा नगरी को बसाने वाले परम प्रतापी एंव प्रकाण्ड पंडित राजा भोज के पिता सिंधुराज थे जिनकी मृत्यु के बाद वि.स. 1066 में भोज गद्दी पर बैठे थे उससे पूर्व मालवा की राजधानी उज्जैन रही है। भोज का राज्य राजस्थान के आबू से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक और पूर्व में कलिंग तक विस्तृत था। भोज ने तैलप सोलंकी चालुक्य के वंशज जयसिंह को पराजित कर अपने ताऊ मुंज की मृत्यु का प्रतिशोध चुकाया था।

पहले यह राज्यवंश उज्जैन राज्यवंश के रुप में जाना जाता था परन्तु भोज के समय से ही धारा राज्य वंश के रूप में पहचाना जाने लगा। जिस राज्य वंश को भ्रम में डालने के लिये इतिहासकार कभी प्रतिहार, परमार के नाम से पुकारते हैं वह वास्तव में सब पंवार ही है। बाहरी आक्रांताओं के साथ इतिहासकारों ने यहाँ के इतिहास एवं नामों को बदलने के हर सम्भव प्रयास किये तथा मैकाले नीति शिक्षा में दीक्षित इतिहासकारों ने तो अपने आकाओं को प्रसन्न करने के लिए उनके अवगुणों, अत्याचारों को हिन्द के इतिहास को विस्मृत कर उन्हे महामंडित करने में कोई कसर न छोड़ी यही कारण है कि हमें हमारे पुरखों से हमारे अतीत से भी अनभिज्ञ रखने की साजिश में वे पूर्णतय सफल रहें हैं। परन्तु हमारी लोक कथाएँ एंव ऐतिहासिक सामग्री, व जो प्रथाएँ हमारे यहाँ चली आ रही है जिसकी पुष्टी शिलालेखों एवं सिक्कों से हो रही है के कारण हमारा अतीत हमारे लिए प्रेरणा के रूप में आज भी सुरक्षित है।

पंवारों का पहला राजा कृष्णराज माना जाता है जो कि @ उपेन्द्र के रुप में प्रख्यात रहा। उदयपुर प्रशस्ति लेख से ज्ञात होता है कि उपेन्द्र ही उज्जैन में शासक के रुप में पंवार कुल का संस्थापक रहा है इसके बाद क्रमशः वैरसी, सीयक, वाक्यपति राजा रहे जिन्होनें मालवा में शासन किया। वाक्यपति राज के बाद उसका पुत्रवैरी सिंह पंवार उज्जैन की गद्दी पर बैठा। इसने सन 972 में राष्ट्रकूटों को परास्त कर मान मर्दन किया, यह परालक्षी रासेमाला जो धनपाल ने लिखी से उजागर होता है। वैरी सिंह ने हूवणों को भी पराजित किया इसकी पुष्टि नवसहशांक चरित्र श्लोक 511 से होती है। वैरीसिंह के सीयक द्वितीय पंवार राजा बने इसके दो पुत्र हुए मुंज और सिंधुराज। सीयक पंवार के बाद मुंज गद्दी पर बैठे वह अपने समय के प्रतापी राजा थे। उप्पलराज, अमौध वर्ष व पृथ्वीपाल आदि कई नामों से इन्हें सम्मानित किया गया था। मेवाड़ के राजा शान्तिकुमार और किराड के राजा वलीराज को हराकर आवू क्षेत्र का राजा अपने पुत्र रामराज को बनाया तथा जालौर का राज्य अपने पुत्र चन्दन को सौंप दिया तथा भीनमाल की गद्दी अपने भतीजे दुशाल को सौंपी। राजा मुंज स्वयं भी विद्वान थे और उनके दरबार में विद्वानों का

जमघट लगा रहता जिनके ग्रन्थ अभी भी उस काल के इतिहास पर प्रकाश डालते है। राजा भोज के बाद सन् 994 ई. में सिन्धुराज गद्दी पर बैठे। सिन्धुराज ने अनेक राजाओं को पराजित किया। सन् 1009 ई. में गुजरात के शासक चामुण्डराज सोलंकी से युद्ध में सिन्धुराज ने वीरगति पाई तब उसका पुत्र भोज मालवा की राजधानी उज्जैन की गद्दी पर बैठा। राजा भोज मालवा में पंवार शासकों में सर्वाधिक विख्यात और वैभवशाली राजा हुए है। राजा भोज ने धारा नगरी बसाकर उसे अपनी राजधानी बनाया। राजा भोज ने पंवार राज्य का भरपूर विकास और विस्तार किया। वर्तमान में भोपाल उन्होंने बसाया था। राजा भोज कुशल शासक था, वास्तु कला विद् एवं साहित्य व संगीत का प्रकाण्ड विद्धान था। भोज ने राजा मार्तण्ड योग शास्त्र श्रृंगार मंजरी कला व्याकरणशास्त्र राजमृगाल या ज्योतिष शास्त्र समरागण या योगशास्त्र कण्ठाभरण या अलंकार शास्त्र नामक अनेक ग्रन्थों की रचना की। भोजप्रबन्ध का लेखक पंडित वतलाल प्रबन्ध चिन्तामणी का लेखक धनपाल, बालस्नेही संहिता का कर्ता व्रजर का पुत्र अवट जैसे प्रकाण्ड विद्वान राजा भोज के दरबारी थे। वैसे तो पंवारों के प्रत्येक राजा का विवरण हमारे पास उपलब्ध है। परन्तु आज हम जिस महान व्यक्ति के जन्म उत्सव पर इकट्ठा हुए है आगे मैं उन्हीं ऐतिहासिक महानात्मा के सम्बन्ध में कुछ शब्द पेश करना चाहता हूँ यही हमारे क्षेत्र में बसे पंवारों का कुल पुरुष है। पंवार वंश में ग्यारहवीं शताब्दीं-विक्रमी सम्वत् में एक ऐसा अनुपम रत्न पैदा हुआ जिसने वीरता और त्याग के नये नये सम्वत कीर्तिमान स्थापित किये। क्षत्रिय धर्म को पुन: गौवान्वित किया। इस वीर और अनुपम रत्न का नाम था जगदेव पंवार।

✧✧✧

✵ राजा जगदेव पंवार का धारा नगरी छोडकर पाटन जाना और रानी वीरमति की बहादुरी

राजा भोज के बाद उसका पुत्र जयसिंह गद्दी पर बैठा तथा उसके बाद में उनके काका उदादिव्य पंवार शासक के रूप में धारानगरी के प्रसिद्ध राजा हुए। उदादिव्य के दो रानियाँ थी, बडी रानी बघेल वंश से

जिसके पुत्र का नाम रणधवल था और दूसरी रानी सौलंकी वंश से। सोलंकी वंश की रानी से जिस पुत्र का जन्म हुआ वह जगदेव ही था। राजा उदादिव्य का प्रेम एवं स्नेह बघेली रानी के पुत्र रणधवल पर अधिक था। जगदेव एंव उसकी माँ महल में उपेक्षित ही थी। जगदेव बचपन से ही होनहार था विशाल वक्ष स्थल, दीर्घमाल घुटनों तक लम्बी भुजाएं, देदीप्यमान मुख मण्डल श्याम रंग और ओजस्वी वाणी से उसका व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली लगता था और अपने क्षत्रिय चित्त गुणों के कारण वह सबका प्रिय था उनके हाथ और मस्तक की रेखा देखकर ज्योतिषी ने उनके लिये भविष्यवाणी कर दी थी कि यह बालक बड़ा ही वीर पराक्रमी और बुद्धिमान बनेगा। बारह वर्ष की आयु में ही वह अस्त्र शस्त्र संचालन विद्या में पूर्ण पारंगत हो गये। तैराकी, घुड़सवारी, तलवार चलाना और तीरंजदाजी में सर्वश्रेष्ठ माना गया। इस अल्पायु में ही उनकी वीरता सौहार्द और पराक्रम की घाल मालवा की सीमाओं को लांघकर पडोसी राज्यों में पहुँच चुकी थी। उनके सर्वगुणों से प्रभावित होकर ही टोकटोडा के महाराज राजसिंह ने अपनी पुत्री वीरमती का विवाह जगदेव पंवार के साथ कर दिया था। महाराज, उदादिव्य ने छोटा पुत्र होते हुये भी रणधवल को महली कुचक्र से युवराज घोषित किये जाने पर जगदेव पंवार उपेक्षित रवैये और अन्याय को देखते हुये उन्होंने धारा नगरी का त्याग कर अपनी पत्नि रानी वीरमती के साथ घनघोर जंगलों को पार कर शेरों का मानमर्दन करते हुए मार्गो को निष्कंरक करते हुए पाटन गुजरात पहुँचे और वहाँ नगर के बाहर सहस्त्रलिंग तालाब पर अपनी पत्नि रानी वीरमती और घोडें को छोड़कर शहर में मकान की तलाश में निकल गये। पाटन में उस समय सिद्धराज का शासन था। वह वीरता और पराक्रम का पारखी, प्रजावत्सल, दयालु और न्यायकारी शासक के रूप में माना जाता था। उसके इन्हीं गुणों के कारण जगदेव पंवार ने उनके यहां आकर कार्य पाने की आस से ही वहां किराये का मकान देखने शहर में चला गया।

उधर सहस्त्रलिंग तालाब पर वह अकेली रुप एंव यौवन से भरपुर महिला के आगमन की सूचना तुरन्त चहुंओर चर्चा में आ गई। कोतवाल

डूगर सी का पुत्र लाल जी अत्यन्त ही शराबी व व्याभिचारी तथा अव्वल दर्जे का धूर्त था। उसने सौन्दर्य की मल्लिका रानी वीरमती को फंसाने के लिये अपनी चहेती वेश्या जगोती को वहाँ भेजा। जगोती अपनी बातों के मकड़जाल में फसाकर रानी वीरमती को व्याभिचारी लालजी के पास ले आई। वास्तविकता का पता लगते ही रानी वीरमती ने सिंहनी के समान गर्जना करती हुई लालजी पर टूट पड़ी और तलवार के एक ही वार में उसका काम तमाम कर टुकडे टुकडें कर फेंक दिये। पुत्र की हत्या का पता चलते ही नगर कोतवाल ने पुलिस बल के साथ मकान को घेर लिया और उसने वीरमती को बन्दी बनाना चाहा लेकिन रानी वीरमती तोरण चण्डी बन गयी और तलवार लेकर उस पर भी टूट पड़ी। इस घटना की खबर राजा सिंधुराज को पता चली तो वह स्वयं वहाँ पहुँचा और वीरमती की तलवार का जौहर देखकर हतप्रभ रह गया। सहसा उसके मुँख से निकल गया 'बेटी' इसी समय जगदेव भी वहाँ पहुँच गया और अपनी पत्नि को इस रूप में देखकर दंग रह गया। उसने राजा को अपना पूर्ण परिचय देते हुए वीरमती के पति के रूप में पेश किया। जगदेव पंवार की वीरता एंव पराक्रम प्रशंसा वह पहले भी सुन चुके थे। जिससे प्रभावित होकर राजा ने जगदेव पंवार और वीरमती को सम्मान पूर्वक अपने दरबार में आमन्त्रित किया। दरबार में जगदेव पंवार ने आने का कारण बताया जो महाराज के लिये बड़े गौरव की बात थी। उसने अपने को गर्वशाली व भाग्यशाली माना कि उन्हें बिना खोजे ही घर पर बैठे एक शूरवीर और बुद्धिमान यौद्धा उसे मिल गया। उसने तुरन्त ही सम्मान जनक वेतन पर जगदेव को अपने दरबार में नियुक्त कर लिया। इस प्रकार रानी वीरमती और जगदेव गुजरात नरेश के दरबार में कार्यरत वहाँ रहने लगे ।

✧✧✧

❋ जगदेव पंवार के बलिदान की कहानी

कुछ समय बाद एक दिन भादो वदी पक्ष की अमावस्या को अंधेरी रात में राजा को किसी स्त्री के रोने की आवाज सुनाई दी उसने दरबारी को पता लगाने को कहा ? प्रत्येक सरदार उस समय काली रात में रोती स्त्री की आवाज से सहम गये आखिर में जगदेव को इशारा किया, वह तुरन्त

आवाज की दिशा में बढ़ चले। उन्हें तो अपने राजा के कार्य का ध्यान था। रात का अंधेरा और भयंकर विलाप उन्हें भयभीत नहीं कर रहा था। वह चला तो राजा भी उसके पीछे –पीछे छिपकर चलता रहा। नगर के बाहर जाकर जगदेव ने देखा कि एक स्त्री बुरी तरह रो रही है जगदेव ने उससे रोने का कारण पूछा तो उसने बताया कि मैं पाटन की राजलक्ष्मी हूँ।

और कल सुबह दस बजे यहाँ के राजा का प्राणन्त हो जायेगा इसलिए मैं रो रही हूँ। यह सुनकर जगदेव पर वज्रपात सा हो गया और उन्होंने राजलक्ष्मी से पूछा की महाराजा की मृत्यु टालने का कोई उपाय हो तो बताये तो राज्य लक्ष्मी ने उसे बताया कि किसी अन्य व्यक्ति की बली देने पर महाराज की आयु बढ़ सकती है। यह सुनकर जगदेव ने प्रसन्नचित्त होकर अपने घर की ओर प्रस्थान किया और अपनी पत्नि वीरमति से कहा कि महाराज से उऋण होने का शुभावसर आया है। सारी बात समझकर वीरमति भी खुश हो गई। उसके दो पुत्र वीरधवल और जगधवल हो चुके थे। इन चारों ने अपना बलिदान देकर राजा को दीर्घजीवी करने का संकल्प कर लिया और अविलम्ब यथा स्थान पर पहुँच गये। जगदेव पंवार ने वहाँ पहुँचकर देवी से पूँछा एक मनुष्य की बलि देने से महाराज की आयु बारह वर्ष बढ़ जायेगी तो यदि चार प्राणी बली दे तो फिर कितने वर्ष आयु बढ़ जायेगी। अड़तालिस वर्ष यह सुनते ही स्वामी भक्त वीर जगदेव ने अपने बड़े पुत्र जगधवल का सिर देवी को अर्पित करने के लिये जैसे ही पुत्र का सिर काटने के लिये तलवार उठाई तो देवी ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा कि जगदेव मैं तो तेरी परीक्षा ले रही थी तुम उसमें पास हो गये। ऐसा कहकर उसने जगदेव पंवार के बडे पुत्र को आशीर्वाद दिया। यह रूप दृश्य महाराज सिद्धराज स्वयं देख रहे थे। अगले दिन महाराज ने दरबार में रात्रि रो रही स्त्री की घटना के विषय में पूछा तो जगदेव पंवार ने सच्ची घटना न कहकर केवल इतना कहा कि रात्रि में बहुत दूर तक गया मुझे कुछ पता नहीं चला। यह सुनकर राजा बहुत प्रभावित हुआ उसने जगदेव परिवार के त्याग को अपने प्रति निष्ठा की बात देखते हुए प्रभावित होकर अपनी पुत्री का विवाह जगदेव से कर दिया और इस प्रकार वे वहाँ 18 वर्ष तक रहे।

✧✧✧

पुनः धारा नगरी में वापस आना

सिंधुराज सोलंकी ने अपने दामाद जगदेव पंवार को हक दिलाने हितार्थ धारा नगरी पर हमला करने की योजना बनाई जिसका पता चलते ही जगदेव पंवार का मातृ भूमि प्रेम जाग उठा और उसने राजा सिद्धराज सोलंकी के यहाँ से अपने बीवी बच्चों को लेकर धारा नगरी की ओर प्रस्थान किया, जहाँ पर उनके माता-पिता एवं भाई ने उनका भव्य स्वागत किया और उदादिव्य ने उसे शासन सत्ता सोपने की पेशकश की लेकिन महाराजा जगदेव ने उसे स्वीकार नहीं किया। जब गुजरात के राजा सिंधुराज ने धारा नगरी पर हमला किया तो उसका मुकाबला करके जगदेव पंवार ने स्वयं ही सेना का सामना करते हुये गुजरात सेना को परास्त कर विजयी सेना के साथ धारा नगरी को अपनी शक्ति का परिचय दिया। उसके बाद राजा जगदेव पंवार आसपास के सभी राजाओं को धारा नगरी के अर्न्तगत अधीनता स्वीकार करने को मजबूर कर दिया। और मूलाहारो का मान मर्दन करते हुए सम्भाव पर पंवार राज्य का विस्तार किया। उसने जिन-जिन राजाओं को हराया इसका वर्णन हम आगे चलकर करेंगें, यहाँ केवल इतना ही कहना चाहते है कि गुजरात का राजा उसी के लिए धारा नगरी पर हमलावर हुआ था। परन्तु अपनी मातृ-भूमि पर दूसरे का हमला उसे स्वीकार नहीं था। अतः उसने मातृ-भक्ति को प्राथमिकता दी, स्वार्थ को त्याग दिया। क्या ऐसे महापुरुष को भुलाया जा सकता है? ऐसी मिसाल कोई अन्य है? आज के स्वार्थी युग में जहाँ स्वार्थ हावी है, देश और मातृभूमि को भी बेचने वालो का बहुमत है, के लिए जगदेव पंवार का स्वार्थ त्याग एक मिसाल के रुप में है।

उसका छोटा भाई रणधवल अपने बड़े भाई से अत्यन्त प्रभावित होकर उसे अपना आदर्श मानने लगा था, उसका प्रयास था कि उसका बड़ा भाई जगदेव ही शासक बने परन्तु जगदेव ने इसे स्वीकार नहीं किया। छोटे भाई ने अपने बड़े भाई को राम के रूप में पूजनीय माना और अपना नाम ही बदल डाला और वह लक्ष्मण के रुप में प्रख्यात हुआ तथा उदादिव्य के बाद जगदेव के विशेष आदेश के तहत लक्ष्मण देव के रुप में धारा नगरी का अधिपति बना। आज के युग में जबकि स्वार्थ संस्कृति

हावी है उसमें जगदेव के त्याग उसके छोटे भाई ने अपने भाई को अपना आराध्य देव मानकर सेवक के रूप में उसका आज्ञा पालन किया।

पंवार वशंजों ने अपने इन पुरखों के जीवन से प्रेरणा ली और उच्च आदर्श के रूप में समाज का मार्ग दर्शन किया।

जैसा कि हम पहले ही कह चुके है कि मालवा में पवारों का जो शासन रहा है पहले उज्जैन से संचालित होता था बाद में धारा नगरी से संचालित होने लगा था। यहाँ के निम्न राजाओं में उज्जैन के नरेश (किशनराज) उपेन्द्र से पंवार शासन की शुरुआत मानी जाती है।

1. उपेन्द्र
2. वैरसी
3. सीयक
4. वकयपतिरान
5. वैरि सिंह
6. सीयक या श्री हर्ष
7. मुंज
8. सिंधुराज
9. भोज
10. जयसिंह
11. उदादिव्य
12. लक्ष्मण देव
13. नर वर्मा
14. यशो वर्मा
15. जय वर्मा
16. अजय वर्मा
17. विन्ध्य वर्मा
18. समर वर्मा
19. अर्जुन वर्मा
20. देवपाल
21. जसतुम देव
22. जय वर्मा
23. जय सिंह
24. अर्जुन वर्मा
25. भोज
26. जय सिंह तृतीय

इस वंश के राजा जय सिंह के वंशज सन् 1309 ई० के आस पास सत्तासीन रहे।

पंवार राजा मुंज ने चेदी नरेश युवराज को परास्त कर त्रिपुरो पर अधिकार कर लिया, मेवाड़ के शक्ति कुमार और किराड के वलिराज को हराकर आवू क्षेत्र अपने पुत्र अरण्य राज को सौंपा तथा भीनमाल राज्य अपने भतीजे दुशाल को दिया। मुंज के बाद सन् 994 में सिन्धुराज गद्दी पर बैठा जिसने कई राजाओं को परास्त किया, सन् 1009 में गुजरात के

शासक चालुक्यराज सोलंकी से युद्ध करते हुये राजा सिद्धराज वीरगति को प्राप्त हुए। उसके पुत्र ने जो भोज के रुप में सर्वाधिक प्रसिद्ध हुआ वैभवशाली पंवार राजा के रुप में सुविख्यात हुआ उसने अपनी राजधानी उज्जैन से हटाकर नई नगरी बसाई जिसका नाम धारा नगरी के नाम से प्रख्यात हुई, भोज ने पंवार राज्य का भरपूर विकास किया। वर्तमान भोपाल इसी राजा भोज ने भोजपाल नगर के नाम से बसाया जो वर्तमान में भोपाल के नाम से जाना जाता है। भोज कुशल शासक वास्तुकला विद एवं साहित्य संगीत का प्रकाण्ड पंडित था। भोज ने राजर्मातण्ड भोगशास्त्र, कण्ठामरण या अलंकारशास्त्र, राजमृगांक (ज्योतिषशास्त्र) समरागण (शिल्पशास्त्र) श्रृंगामजरी कला (व्याकरण शास्त्र) नामक अनेकों ग्रन्थों की रचना की। योग प्रबन्ध का लेखक पंडित वल्लाल प्रबन्ध चिन्ताणि का लेखक धनपाल बाजस्नेही संहिता का कर्ता व्रजर का पुत्र अवर जैसे प्रकाण्ड पंडित राजा भोज के दरबारी थे।

✧✧✧

❋ पंवार राजाओं के अन्य राज्य

राजा भोज के बाद उसका उत्तराधिकारी जयसिंह बना जो सन् 1042 में मालवा का राजा बना। जय सिंह के शासनकाल में गुजरात के सौलंकियों व कलचुरियों ने मालवा पर आक्रमण किये पर उन्हें हर बार पंवार सेना द्वारा पराजित किया जाता रहा।

पंवारों का दूसरा राज्य आबू रहा जहाँ पहला राजा सिंधुराज रहा उसके बाद धरणीबराह तथा क्रमशः अरण्यराज, कृष्णराज, धून्धक, पूर्णपाल, कृष्णराज द्वितीय, ध्रवभट्ट, रामदेव, विक्रम सिंह, यशोधवल, धरावर्ष, सोमसिंह, कृष्णराज तृतीय, प्रताप सिंह तथा विक्रम सिंह द्वितीय राजाओं ने आबू में राज्य किया।

पवारों का तीसरा राज्य बागड (राजस्थान) का डूंगर पुर और वांसवाडा क्षेत्र प्राचीन समय से ही बागड़ के नाम से जाना जाता रहा है। मालवा नरेश वैरीसिंह ने सीयक और डम्बर सिंह को बागड़ क्षेत्र का अधिकारी बनाया था जहाँ उन्होंने ई. सन् 925 के आस-पास पृथक बागड़ राज्य को अलग से संचालित किया। डम्बरसिंह का उत्तराधिकारी उसका

पुत्र हुआ जो धनिक पंवार के नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसने उज्जैन में धनिकेश्वर शिव मंदिर का निर्माण कराया था। धनिक पंवार के बाद क्रमशः चच्च, ककदेव, चण्डय, सत्यराज, लिवराज और माण्डिलिक वार्गडन ने बागड़ राज्य में शासन किया सन् 1180 ई. में मेवाड़ के राजा सांवत सिंह ने पवारों से बागड़ राज्य छीन लिया था। पवारों का चौथा राज्य वाता (गुजरात) रहा है। मालवा के राजा केशरी सिंह सन् 1220 के आस पास वाता में अपना राज्य स्थापित किया, जिसकी राजधानी तरसगढ़ थी। राजा केशरी सिंह के बीसवें वंशज राजा जगमाल पंवार ने वाता पर अधिकार कर उसे अपनी राजधानी बनाया। जगमाल के जयसिंह और पूजा जी दो पुत्र हुए। जयसिंह को माकडी की जागीर मिली और पूजा जी वाता की गद्दी पर रहा। पूजा पंवार के मानसिंह, अमर सिंह और घीगा जी नामक तीन पुत्र हुए। मानसिंह वाता की गद्दी पर रहा तथा अमर सिंह ने सुदासना और घीगा जी के गणधारण में अपनी जागीर बनाई। राजा मानसिंह के वंशज देश की स्वतन्त्रता तक दाता के शासक रहे।

पंवारों का पाचवां राज्य जालौर रहा। मालवा नरेश मुंज ने ई0 सन् 977 में जालौर दुर्ग पर अधिकार कर लिया और अपने पुत्र चंदनराज को वहाँ का शासक बनाया। उसके बाद देवराज जालौर का राजा बना। देवराज ने जालौर राज्य का और अधिक विकास किया। वीसल देव जालौर का अंतिम शासक हुआ।

पंवारों का प्रसिद्ध राज्य भीनमाल (राजस्थान) रहा है। मालवा नरेश मुंज ने सन् 977 में भीनमाल पर अधिकार कर लिया। अपने भतीजे देवराज दूसाल को वहाँ का राजा नियुक्त किया था। राजा देवराज के बाद क्रमशः कृष्णराज, सौराज, उदयराज, भीनमाल राज्य की गद्दी पर बैठे, उदयराज के पुत्र सोमेश्वर ने राज्य का विकास व विस्तार किया। उसके बाद जयन्त सिंह सल्खनदेव, अर्जुन देव, रामदेव, सारंगदेव और अन्त में बारहवां राजा कर्णदेव हुआ।

पंवारों का सातवां राज्य जगदीशपुर (बिहार) में रहा है। मालवा के कुछ पंवार राज्यवंशी तीर्थाटन के लिए **गया** जी गये थे। लौटते समय उन्होंने बिहार के शाहबाद क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया और अपना

राज्य कायम कर वहीं शासन करने लगे। शाहबाद के शासकों के वंशज राजा नारायणमल पंवार को शाहबाद शाहजहाँ मौजपुर की जाँगीर भी सौंप दी थी। नारायणमल ने जांगीर दो हिस्सों में बाँट दी। बड़े पुत्र को जगदीशपुर और छोटे पुत्र को मेदीपुर का हिस्सा सौंपा। जगदीशपुर के पंवार राजा कुँवर सिंह ने लगभग 80 वर्ष की आयु में भी अंग्रेजों के खिलाफ तलवार उठाई और देश के लिए एक सच्चे और स्वाभिमानी की भाँति अपना प्रणोत्सर्ग कर पंवार वंश को अभिमान करने का अनुठा मार्ग प्रदर्शित किया। **पंवारों का आठवाँ राज्य अमर कोट (सिन्ध) में रहा है।** यहाँ पंवार वंशी मारवाड़ के वंशज सदियों पूर्व से सत्तासीन रहे। मारवाड के राजा धरणीशाह पंवार का वंशज सोढ़ा पंवार नये राज्य की खोज में सहारु, अमरकोट जा पहुँचा तथा अमर कोट में रह रहे सुमरा पंवारों के सहयोग से राजकोट दुर्ग पर सोढा पंवार ने कब्जा कर लिया। सोढापंवार के बाद रायसी और उसके बाद चुचक देव पंवार राजकोट का शासक रहा। चुचकदेव ने सन् 1155 ई0 में सुमरा पंवारों से अमरकोट भी अपने कब्जे में लेकर उसे अपने राज्य में मिला लिया। चुचकदेव के बाद क्रमशः जयप्रभ, जस्सूद, सोमेश्वर व धारा वर्ष अमरकोट के शासक रहे। राणा धारा वर्ष के बारहवीं पीढ़ी में वंशज राजा पत्ता पंवार के समय बादशाह हुमायुँ ने अमरकोट में ही शरण ली थी और इन्हीं के महल में सन् 1542 ई. में अकबर का जन्म हुआ था। राजा पत्ता चौथी पीढ़ी के वंशज ईश्वर दास से सन् 1653 ई0 के आस पास रावल सवल सिंह जैसलमेर ने अमरकोट छीन लिया और इन्हीं के साथ अमरकोट से पंवारों का शासन खत्म हो गया।

उसके अतिरिक्त वाग्वगढ़, भाण्डू, भवनार, महेश्वर, पौढ़ीगढवाल पंवारों के अन्य छोटे बड़े राज्य रहे है। राजस्थान व खेड़ा तहसील में पंवारो के कई सौ गांव है। पंवारो के भाटों के ग्रन्थ के अनुसार सन् 1303 ई. के आस-पास मालवा पर मुसलमानों का अधिकार हो जाने के बाद मालवा नरेश जयसिंह के पुत्रों अजमसिंह अशोक और शंभुसिंह ने आगरा के पास लगनेर में अपना पडाव डाला था। कुछ समय पश्चात अशोक ने अहमद नगर के पास अपना राज्य स्थापित कर लिया, वह स्वयं अगनेर में

रहा और अन्य केन्द्र बसेडी तातीपुर, गुगावाद, घनीना, वसई, रायत बानगर आदि विशेष उल्लेखनीय है। जिस प्रकार चंदेरी वंशज चंदेल, वैशाली के वैश्य इसी प्रकार डोडियां के वंशज डोडिया पंवार कहलाये। बहादुर सिंह वीदासर ने पंवारों की उत्पत्ति मालवा नरेश उदादिव्य का समय सन् 1086 के आस-पास बताया है। जबकि बारण (बुंदेलखण्ड) के शासक अनंग डोडिया के 1233 विक्रमी सन् 1176 के शिलालेख में उनके पन्द्रह पूर्वज शासकों के नाम का उल्लेख मिलता है। इस विशाल लेख के अनुसार (डोडियां) पंवारों की उत्पत्ति इसी सन् 800 के आस पास गुजरात प्रान्त के वडोदा जनपद के पंवारों का एक ठिकाना डोडा था जिसके कारण वहाँ से चले पंवार डोडिया पंवार कहलाये।

पंवारो का 32वाँ राज्य दसरदार (राजस्थान) गुजरात के कठियावाड़ के क्षेत्र में शादिलगढ़ के वंशज सिंह डोडिया राजा (मेवाड़) की सेवा में पहुँचा। महाराज की मां द्वारिकापुरी यात्रा के लिये तीर्थाटन पर गई, रास्ते में लुटेरों ने उन्हें लूटना चाहा, उसके साथ रक्षार्थ गयासिंह डोडिया पंवार लुटेरों से लड़ता-लड़ता शहीद हो गया। महाराजा लाखा ने खुश होकर गयासिंह डोडिया के पुत्र धवल को जाँगीर प्रदान की। धवल डोडिया पंवार के वंशज सरदार सिंह को मेवाड़ का लावा ठिकाना जाँगीर के रूप में मिला। सरदार सिंह के कारण मेवाड का वह क्षेत्र सरदारगढ़ के नाम से सुविख्यात हुआ। सरदारगढ़ के पंवार राजाओं के नाम इस प्रकार है। 1. धवल 2. सल 3. नाहर सिंह 4. किशनसिंह 5. कर्णसिंह 6. भाण 7. शरवा 8. भीम सिंह 9. गोपाल सिंह 10. जय सिंह 11. नवल सिंह 12. चन्द्रभान सिंह 13. सरदार सिंह 14. सामन्त सिंह 15. राज सिंह 16. जोरावर सिंह 17. मनोहर सिंह 18. मोहन सिंह 19. लक्ष्मण सिंह 20. अमर सिंह।

उनके पिपलोवा डाणी (म.प्र.) चापानेर, गुदनखेडी (गुजरात) आदि अन्य क्षेत्र है जहाँ इनकी तूती बोलती रही। वर्तमान में डोड़ा पंवार उ.प्र. के मेरठ, बुलन्दशहर, गाजियाबाद, बागपत, देहरादून, पौढ़ीगड़वाल, वाँदा तथा म.प्र. के पन्ना, देवास, छतरपुर, आदि जनपदों में आ बसे, राजस्थान तथा गुजरात में भी कहीं-कहीं डोड़िया पंवार बसे हुए

है। उत्तर भारत के सभी पंवारों का आगमन लगभग धारा नगरी से ही हैं। भीनपाल, अनहिल्वाडा (गुजरात) के वंशज अहवन के पुत्र गोपी और सोंपी हुए, इसवीं 1140 के आस-पास तीर्थटन **हेतू-गया** जी गये थे। लौटते समय इन्होंने अपने राज्य कायम किये। गोपी ने मऊ में तथा सोपी ने भरवार में अपने राज्य स्थापित किये। बसन्तगढ़ (राजस्थान) अनहिलवाडा (गुजरात) पाटन (गुजरात) मनासा, वरसोढ़ा, महीकाण्ठा, रामपुरा, भीलोडिया, मऊ (कन्नौज) भूर वार (कन्नौज) अमर कोट (सिन्ध) राजगढ़, नरसिंह पुर (म.प्र.) मालव नरेश उदादिव्य के पुत्र जगदेव पंवार के पुत्र काबा के वंशज काबा पंवार के नाम से विख्यात है। जिनके जालौर (राजस्थान) के अन्तर्गत रामसीन, मालपुरा, कौल, थूहर, पनगर, सनदवा, बडागांव, भुतानवास, रतनपुरा आदि प्रमुख क्षेत्र है।

जगदेव के पुत्र गलहडा के वंशज गलहडा कहलाये थे। वाड़मेर राजस्थान क्षेत्र के धूनिया इनका बडा केन्द्र है।

वरण (बुलेन्दखण्ड) में पंवारो का शासन रहा इसवीं सन् 850 के आस पास वरण राज्य की स्थापना हुई वि.स. 1233 के शिलालेख अनुसार वारण के पंवारो राजाओं के नाम निम्न है -

1. राजा चाचक 2. धरणीबरह 3. प्रमाप 4. भैरव 5. रुपप्रताप 6. गोविन्दराज 7. यशोधर 8. हरिदत्त 9. त्रिभुनादिव्य 10. भाग्योदिव्य 11. कुलदिव्य 12. विक्रमादिव्य 13. परमादिव्य 14. भेजदेव 15. सहत्रदेव 16. अनंग।

।। समाज में भागीदारी, हिस्सेदारी व जिम्मेदारी निभाने से आपका स्तर अपने आप उपर उठता है।।

भरत पँवार।।

पंवार गौत्र के आसपास जनपदों के गाँव

मुजफ्फरनगर

1. मन्दौड़
2. सिखेड़ा
3. नंगला कबीर
4. नंगला मुबारिक
5. राटौर
6. जन्धेडी
7. पलडा (पाल)
8. वाजिदपुर
9. घटायन दक्षिणी
10. नागौडी
11. कस्सोपुर
12. टंढेडा
13. बेहडा सादात
14. चौरावाला
15. छछरौली
16. निरगाजनी
17. भोकरहेडी
18. मखियाली
19. पीनना
20. बढ़ेडी
21. दतियाना
22. बेगराजपुर
23. घासीपुरा
24. खानूपुर
25. मोलाहेडी
26. खतौली
27. मुकन्दपुर
28. अमीननगर
29. खेडी दूदाधारी
30. आखलौर
31. वैली
32. ओल्ली माजरा
33. चन्धेड़ी
34. मुस्तफाबाद (पचैंडा)

बागपत

36. शबगा
37. दोघट
38. मोजीजाबाद नाँगल
39. भगवानपुर
40. इदरीशपुर
41. आदमपुर
42. कान्हड़
43. पलड़ी
44. ककड़ीपुर
45. बसी
46. सुन्हैड़ा
47. तेडा (राजपूत)
48. अहेडा (गूजर)
49. बली (गूजर)

शामली

50. भारसी

51. नाला
52. भैंसवाल
53. भनेडा
54. मादलपुर
55. तलवा-माजरा
56. एलम
57. शाहपुर
58. मालेण्डी
59. नोनांगली
60. करौड़ी
61. गढ़ीपुख्ता
62. कसेरवा
63. जंधेड़ी
64. होशांगपुर

हरिद्वार

65. नारसन कलां
66. नगला रजौली
67. लिब्बाहेड़ी
68. नसीरपुर

मुरादाबाद

69. काँठ
70. रैनी
71. मुगलवाला

बिजनौर

72. अखलासपुर
73. नसीरी
74. झलरी मोरंगपुर तारा
75. मोचीपुरा
76. मुकरपुर शक्ति
77. बिजनौर
78. दामन नगर
79. नारायण हकीतपुर

मथुरा

80. गिन्डाए
81. रवरोट
82. नन्दग्राम
83. ओचन्दी
84. कतलपुर
85. दिल्ली

बुलन्दशहर

86. प्राणगढ़
87. रोरा-शेखपुर
88. बुटैना
89. भैंसरौली
90. रिसौढा
91. हैदरपुर गढ़ी
92. रहमापुर सावली
93. छोटा जुगसाना
94. रवनपुरा

सहारनपुर

95. टीकरौल
96. लंढौरा
97. पुवाँरका (गूजर)

मेरठ

98. डहार
99. चौमला

100. ढढरा
101. सकौती
102. दांतल जटौली
103. जसड राजपूत
104. गोटका राजपूत
105. पोहली दबथुवा
106. पबरसा

हापुड़

107. खुडलिया
108. हरौड़ा

गाजियाबाद

109. पैंगा
110. जलालाबाद
111. रावली
112. सराय रज्जापुर

दिल्ली

113. शाहपुर जाट
114. बेर सराय

हरियाणा राज्य हिसार

115. पनिहारी

सोनीपत

116. बली (उल्हाना)
117. जासीपुर
118. चटिया देवा
119. सैदपुर
120. सामड़ी

पानीपत

121. चंदौली

झज्जर

122. खाचरौली

जीन्द

123. नरवाणा
124. काकडोद
125. बीबीपुर
126. हॉट

भिवानी

127. बढेसरा
128. बहलाम्भा

सोहनागुडगांव

129. इण्ढरी
130. कालियाका

राजस्थान राज्य

130. गोकुलपुरा
131. बांसदा
133. पिलानी
133. कोटा-बूंदी

संशोधन या सुझाव के लिये आपके विचार सदैव सादर आमन्त्रित है। पुरातन इतिहास को ढूंढ़ निकालने में त्रुटि हो सकती है। पंवार भाईयों से निवेदन है कि अपने सुझाव आगामी संस्करण के लिये अवश्य भेजें

सम्पर्क सूत्र : 9811024446, 9810222041, 9711773155
9810476712, 9868118147, 8447291985